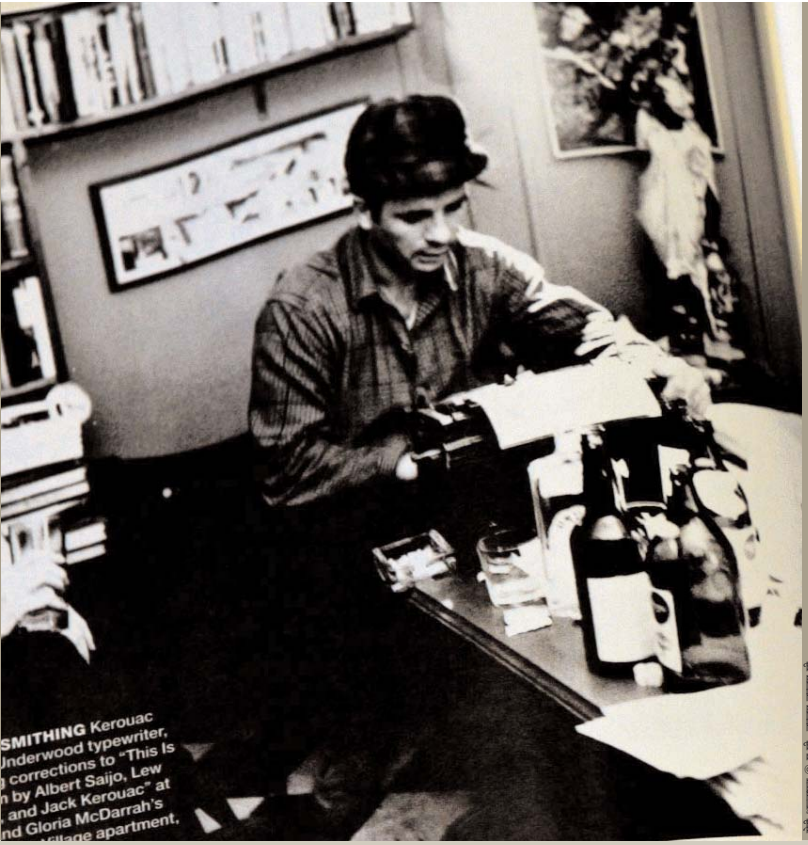

मेरी अल्लाफ़ © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

जैक किराक अनूठी शैली वाला साहित्यकार

अंजुम नईम

विश्व साहित्य के इतिहास में बीट पीढ़ी आंदोलन की कोई बात जैक कीरॉक का नाम लिए बिना पूरी नहीं हो सकती। यह कहा जा सकता है कि जो लोकप्रियता एलन गिंस्बर्ग, गैरी सैंडर और विलियम बौरोग को मिली, वह स्थान जैक कीरॉक को नहीं मिल सका। लेकिन साहित्य में बीट पीढ़ी के जिस अंदाज को पहचान मिली उसको आकार देने में सबसे उत्कृष्ट भूमिका जैक कीरॉक ने ही निभाई। उनकी सारी कृतियां आत्मकथा के रूप में दिखती हैं। उनका जीवन ऐसे दौर से रूबरू कराता है जिसे विफलताओं, निराशाओं और महरूमी के अनुभव ने एक खास रूप दिया था।

जैक कीरॉक का जन्म 12 मार्च 1922 को लोवेल के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पारिवारिक स्थिति ठीक न होने के कारण जैक शुरू से ही शांत स्व भाव के दिखते थे और उनके बड़े भाई की युवावस्था में मृत्यु ने तो उन्हें और भी तोड़ दिया था। कहानियां गढ़ने की कला उनमें बाल्यावस्था में ही समाने लगी थी। उनके बाल्यकाल में लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम ''द शैडो'' ने उन पर जादुई असर डालना शुरू कर दिया था। पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, इसलिए वह कम उम्र में ही रोजगार की तलाश के लिए मजबूर हो गए। अपने कॉलेज के जमाने में वह कई तरह के काम में व्यस्त रहे लेकिन कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क का दौर उनके लिए नए रास्ते खोलने का जरिया बना। हालांकि वहां फुटबॉल प्रशिक्षक से झगड़े के बाद वह अपने रोजगार से हाथ धो बैठे थे और पिता की खस्ता हालत ने भी उन पर असर डाला लेकिन रचनात्मक स्तर पर वह उस समय अपने जीवन के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे थे। दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। सेना में शामिल होने की कोशिश और उसमें विफल होने के कारण वे और भी टूट गए। लेकिन उसी दौरान गिंस्बर्ग, लोकीन कार, बौरोग और कैसेडी से दोस्ती की वजह से वह अलग तरह से व्यस्त हो गए। यह वह जमाना था जब कीरॉक पूरी तरह से उपन्यास लिखना शुरू कर चुके थे और उन्होंने थॉमस ओल्फ की शैली को अपना रखा था। इस उपन्यास में उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने जीवन की विफलताओं और दरिद्रता को विशेष विषय बनाया। दोस्तों में इस उपन्यास की बहुत सराहना हुई और गिंस्बर्ग ने अपने कोलंबिया विश्वविद्यालय के अध्यापकों को उनकी पांडुलिपि दिखाकर उसे प्रकाशित करने की योजना बनाई। ''द टाउन एंड द सिटी'' के नाम से प्रकाशित कीरॉक का यह पहला उपन्यास न केवल साहित्य के क्षेत्र में लोकप्रिय हुआ बल्कि इसके प्रकाशन से उन्हें विश्वसनीयता भी मिली। उसके सात साल बाद उनकी दूसरी रचना ''ऑन द रोड'' प्रकाशित हुई और वह भी बहुत लोकप्रिय हुई।

उन्होंने 1950 के दशक के शुरू में अपने दोस्त नील कैसेडी के साथ देश के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक दौरा किया। इस बीच वह अपनी रचना के लिए सामग्री जुटाते रहे। उस समय तक उनके गद्य की अपनी एक अलग शैली बन चुकी थी जिसमें बनावटीपन और दिखावे के लिए कोई स्थान नहीं था। नील कैसेडी को लिखे गए उनके पत्र उस युग की शैली का नमूना हैं। गिंस्बर्ग और कैसेडी के साथ बर्कले और सैनफ्रांसिस्को की यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात प्रसिद्ध कवि गैरी सैंडर से हुई और फिर उन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव साफ दिखने लगा। आध्यात्मिक अनुभव कहें या हृदय में उठने वाले विचारों का प्रभाव, यह वही दौर था जब बीट पीढ़ी ने बौद्धिक रूप धारण कर लिया और 1955 तक कीरॉक इस सोच के सबसे विश्वसनीय टीकाकार के रूप में पहचाने जाने लगे।

1957 में जब उनकी रचना ''ऑन द रोड'' प्रकाशित होकर बाजार में आई तो नई पीढ़ी के लेखकों ने उसे आधुनिक लेखन के ग्रंथ के रूप में हाथोहाथ लिया। फिर 1958 में ''धर्मा बम्स'' और ''द सबटेरानेंस, 1958 में ''डॉक्टर सेक्स'', 1960 में ''लोनसम ट्रैवलर'' और 1962 में ''बिग सर'' प्रकाशित हुईं। कीरॉक को अचानक मिली यह लोकप्रियता उनके लिए घातक साबित हुई। कुछ साल बाद नई पीढ़ी का यह प्रतिनिधि लेखक आध्यात्मिक स्तर पर अचानक तबाही का शिकार हो गया। उनके कुछ दोस्तों के लिए उनकी स्थिति समझ से परे हो गई। वर्ष 1961 में उन्होंने नशे की लत छोड़ने की कोशिश की और नए ढंग से जीवन बिताने के लिए अपनी मां के साथ कैलिफोर्निया छोड़कर लांग आइलैंड में जाकर बस गए लेकिन उनकी हालत नहीं बदल सकी। अधिक शराब पीने की वजह से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 21 अक्टूबर 1969 को 47 साल की आयु में यह अत्यधिक बुद्धिमान साहित्यकार हमेशा के लिए खामोश हो गया। □